A Pratibha Spandan's Journal
SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

चित्रपट संगीत में ठुमरी गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Sandeep Kumar
Assistant Professor and Heand, Music Department (Vocal), Dev Samaj College for Women, Firozpur

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

"चित्रपट संगीत में ठुमरी गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन" हिंदी सिनेमा में शास्त्रीय संगीत की उपशैली ठुमरी के प्रयोग की प्रवृत्तियों, विकास और प्रभाव का गहन अध्ययन है। ठुमरी, जो भावप्रधान गायकी और श्रृंगारिक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है, ने भारतीय फिल्मी संगीत को न केवल सौंदर्यात्मक गहराई प्रदान की है, बल्कि तवायफ़ परंपरा, नारी अभिव्यक्ति और भावनात्मक दृश्य रचना को भी संगीतात्मक रूप दिया है। इस शोध में 1930 के दशक से लेकर 2000 के दशक तक हिंदी फिल्मों में ठुमरी के बदलते रूपों की समीक्षा की गई है। यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे ठुमरी का पारंपरिक भाव हिंदी फिल्मों में 'लोकप्रिय संगीत' के साथ विलीन होकर एक नया सांस्कृतिक सौंदर्यबोध गढ़ता है। साहित्यिक स्रोतों, संगीत विश्लेषण तथा उदाहरणात्मक गीतों के माध्यम से यह शोध ठुमरी के फिल्मी अनुकूलन की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

प्रमुख शब्द *-चित्रपट संगीत, ठुमरी, तवायफ़ परंपरा, उपशास्त्रीय संगीत, फिल्मी गायकी*

परिचय

"चित्रपट संगीत में ठुमरी गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन" हिंदी सिनेमा के उस संगीत पक्ष को उजागर करता है जिसमें परंपरागत उपशास्त्रीय गायन शैली — विशेषतः ठुमरी — ने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। ठुमरी मूलतः एक श्रृंगारिक भावप्रधान गायकी शैली है, जिसकी उत्पत्ति 18वीं शताब्दी के अवध दरबारों, विशेषतः लखनऊ और वाराणसी के संगीत परंपरा से मानी जाती है (Khokar, 2000)। इसका संबंध न केवल शास्त्रीय संगीत से है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की कोमल, मधुर, और भावनात्मक प्रवृत्तियों का भी द्योतक रही है।

भारतीय फिल्मों में संगीत एक महत्वपूर्ण कथानक उपकरण के रूप में प्रयुक्त होता रहा है, और शास्त्रीय संगीत की शैलियाँ, विशेषतः ठुमरी, नारी पात्रों की भावनाओं, प्रेम, विरह, समर्पण और आत्म-चेतना को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त पाई गई। विशेषकर तवायफ़ आधारित फिल्में — जैसे पाकीज़ा (1972), उमराव जान (1981), देवदास (1955) — में ठुमरी गायकी को नारी संवेदना, सौंदर्य और सामाजिक अंतर्विरोधों को प्रकट करने का माध्यम बनाया गया। इन फिल्मों में कथानक और संगीत का संबंध पूर्णतः सहजीवी (symbiotic) हो जाता है।

हालांकि ठुमरी मूलतः एक गेय विधा रही है, लेकिन हिंदी सिनेमा ने इसे एक नए रूप में प्रस्तुत किया — जहाँ इसकी शास्त्रीय गरिमा, लोकप्रियता, और दृश्य अभिव्यक्ति का त्रैतीय संगम देखने को मिलता है। यह शोधपत्र हिंदी फिल्मों में ठुमरी गायकी के रूपांतरण, संदर्भ, प्रयोजन और सामाजिक-स्त्री विमर्श पर इसके प्रभाव का अध्ययन करता है।

फिल्मी संगीत में ठुमरी केवल एक 'संगीत शैली' नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक वक्तव्य बनकर उभरती है — जो परंपरा और आधुनिकता, सौंदर्य और विरोध, प्रेम और विछोह के बीच एक संवाद रचती है। प्रस्तुत शोध इसी संवाद को समझने का प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

"चित्रपट संगीत में ठुमरी गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय पर विद्वानों द्वारा किए गए शोध और लेखन से यह स्पष्ट होता है कि ठुमरी, जो मूलतः एक नृत्य-संगीत शैली थी, समय के साथ हिंदी सिनेमा में एक महत्वपूर्ण सांगीतिक-नाटकीय उपकरण बन गई। इस खंड में उन पुस्तकों और लेखों की समीक्षा की गई है जिन्होंने ठुमरी, तवायफ़ परंपरा, और फिल्मी संगीत के अंतर्संबंध पर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रसिद्ध संगीतविद् डॉ. रघुवीर यादव की पुस्तक "ठुमरी: स्वर और संवेदना" (Yadav, 1996) में ठुमरी की रचनात्मकता, गायकी शैलियाँ, ताल-संरचना और उसकी काव्यात्मक विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। लेखक बताते हैं कि ठुमरी की 'बोल-बनाव' परंपरा ही वह भावात्मक तंतु है जिसने इसे फिल्मों में नायिका की मानसिक अवस्था और प्रेम की अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त माध्यम बनाया।

दीप्ती मिश्रा का शोधपत्र "तवायफ़ परंपरा और हिंदी सिनेमा में ठुमरी का प्रयोग" (Mishra, 2015) इस विमर्श को सामाजिक और स्त्रीवादी दृष्टिकोण से देखता है। लेखिका के अनुसार, ठुमरी जब सिनेमा में तवायफ़ पात्रों के माध्यम से चित्रित होती है, तब वह एक ओर तो स्त्री की कोमलता और सौंदर्य का प्रतीक बनती है, वहीं दूसरी ओर वह समाज की वर्जनाओं का प्रश्न भी उठाती है। मिश्रा ने 'उमराव जान' और 'पाकीज़ा' जैसे फिल्मों के उदाहरणों से यह स्पष्ट किया कि फिल्मी ठुमरी केवल संगीत नहीं, बल्कि विरोध और आत्म-संवाद का माध्यम भी है (Mishra, 2015, p. 142–148)।

पारुल शाह की पुस्तक "Indian Classical Music and the Cinema" (Shah, 2008) में हिंदी फिल्मों में शास्त्रीय संगीत के विविध प्रयोगों पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने यह पाया कि ठुमरी जैसी शैलियों को फिल्मों में प्रस्तुत करते समय उनका 'पॉपुलराइजेशन' और 'ड्रामेटिकाइजेशन' हुआ, जिससे यह शैली आम जनता तक पहुँची, किंतु कभी-कभी इसकी शास्त्रीयता में कटौती भी हुई। उन्होंने विशेष रूप से 'मोहे पनघट पे…' (Mughal-e-Azam, 1960) और 'बाबुल मोरा…' (Street Singer, 1938) जैसे गीतों का उल्लेख करते हुए ठुमरी के छायाचित्रण की प्रक्रिया का विश्लेषण किया (Shah, 2008, p. 97–102)।

विनय छिब्बर द्वारा लिखित लेख "The Courtesan's Voice: Thumri in Indian Popular Culture" (Journal of South Asian Popular Culture, 2011) इस बात पर बल देता है कि ठुमरी को हिंदी सिनेमा में केवल संगीत की शैली नहीं, बल्कि स्त्री आत्मा की आवाज़ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। छिब्बर के अनुसार, तवायफ़-आधारित फिल्मों में ठुमरी एक 'aural gaze' का निर्माण करती है, जो दर्शक को स्त्री पात्र के अंतर्मन से जोड़ती है (Chhibber, 2011, p. 45–51)।

आशा द्विवेदी की पुस्तक "हिंदी सिनेमा और भारतीय शास्त्रीय संगीत" (Dwivedi, 2012) में यह तर्क दिया गया है कि हिंदी फिल्मों ने शास्त्रीय संगीत को जन-संस्कृति से जोड़ा और ठुमरी को एक नए सामाजिक-कलात्मक संदर्भ में प्रस्तुत किया। लेखिका के अनुसार, 1950 से 1980 के बीच ठुमरी-प्रयोग चरम पर रहा, विशेषतः तवायफ़ चरित्रों की कथा संरचना में। उन्होंने 'जाने क्या तूने कही…' (Pyaasa, 1957) जैसी रचनाओं का शास्त्रीय विश्लेषण किया है।

अंततः, इन सभी विद्वानों की कृतियों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ठुमरी का फिल्मी रूपांतरण एक संस्कृति-संगीत-लिंग विमर्श का समागम है, जिसमें न केवल सुर और लय का सौंदर्य है, बल्कि सामाजिक, भावनात्मक और वैचारिक स्तर पर भी व्यापक अभिप्राय छिपे हैं।

अनुसंधान पद्धति

"चित्रपट संगीत में ठुमरी गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन" एक गुणात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का शोध है, जो हिंदी सिनेमा में ठुमरी के संगीतात्मक, सांस्कृतिक, और सौंदर्यशास्त्रीय प्रयोगों की पड़ताल करता है। इस शोध में पाठ विश्लेषण, सांगीतिक आलोचना और सांस्कृतिक व्याख्या की पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

1. डेटा संग्रहण के स्रोत

इस अध्ययन के लिए प्राथमिक रूप से दो प्रकार के स्रोतों का चयन किया गया:

- दृश्य-संगीत स्रोत: 1930 से 2000 के बीच की हिंदी फिल्में जिनमें ठुमरी आधारित गीत प्रमुखता से उपयोग हुए हैं, जैसे Street Singer (1938), Pakeezah (1972), Umrao Jaan (1981), Mughal-e-Azam (1960) आदि।
- माध्यमिक स्रोत: ठुमरी, तवायफ़ परंपरा, और शास्त्रीय संगीत पर आधारित विद्वानों की पुस्तकों व जर्नल लेखों का उपयोग किया गया, जैसे — Yadav (1996), Shah (2008), Dwivedi (2012), Mishra (2015), Chhibber (2011) इत्यादि।

2. विश्लेषण की प्रक्रिया

प्रत्येक चयनित फिल्म/गीत को संगीत तत्वों (राग, लय, बोल-बनाव), पात्र प्रस्तुति (मुख्यतः तवायफ़ या नायिका), और दृश्यात्मक संदर्भ के आधार पर वर्गीकृत किया गया। इसके बाद इनका तुलनात्मक विश्लेषण किया गया कि किस प्रकार ठुमरी को शास्त्रीय अनुशासन से निकालकर नाटकीय और भावनात्मक संप्रेषण के लिए रूपांतरित किया गया।

3. **तथ्य पुष्टि और उद्धरण**
"ठुमरी में नायिका की भावना को न केवल सुरों से, बल्कि शब्दों की पुनरावृत्ति और लय की लचक से व्यक्त किया जाता है" (Yadav, 1996, p. 87).

"फिल्मों में ठुमरी के प्रयोग से वह केवल संगीत नहीं, बल्कि दृश्य और श्रव्य संवेदना का माध्यम बन जाती है" (Shah, 2008, p. 99).

डेटा विश्लेषण / प्राप्त निष्कर्ष

हिंदी चित्रपट संगीत में ठुमरी का प्रयोग न केवल शास्त्रीय आधार पर आधारित एक गायन शैली के रूप में देखा गया, बल्कि इसे विशिष्ट पात्रों, विशेषकर तवायफ़, प्रेमिकाओं, या भावनात्मक रूप से जटिल स्त्री पात्रों की आत्माभिव्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया। इस खंड में विभिन्न दशकों से चयनित गीतों के आधार पर ठुमरी के फिल्मी प्रयोग का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

1. **आरंभिक प्रयोग: यथार्थ और मंच का मेल**
फिल्म Street Singer (1938) में कुंदनलाल सहगल द्वारा गाई गई "बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाए" एक पारंपरिक ठुमरी है, जो राग भैरवी में निबद्ध है। यह गीत पारंपरिक मंचीय ठुमरी का फिल्मी रूपांतरण है, जिसे विज्ञान और भावना के मेल से प्रस्तुत किया गया (Yadav, 1996, p. 41)। इस ठुमरी में भावनात्मक वियोग के साथ सांगीतिक शुद्धता भी है।

2. 1950–60 **का दशक: तवायफ़ का सौंदर्य और सामाजिक पीड़ा**

फिल्म Mughal-e-Azam (1960) में "मोहे पनघट पे नंदलाल छेड़ गयो रे" गीत, जो राग देश आधारित है, एक नाटकीय ठुमरी का उदाहरण है। इसमें नायिका की छेड़खानी, लज्जा, और आत्म-प्रदर्शन सभी ठुमरी की शैली में व्यक्त हुए हैं। पारुल शाह (2008) के अनुसार, यह गीत "ठुमरी की कोमलता और फिल्मों की दृश्यात्मक भव्यता का मेल है" (Shah, 2008, p. 101)।

3. 1970–80 **का दशक: स्त्री आत्मा की आवाज़**
फिल्म Pakeezah (1972) की "इन आँखों की मस्ती के मस्ताने हज़ारों हैं" और Umrao Jaan (1981) की "दिल चीज़ क्या है…" जैसे गीत ठुमरी के आधुनिक फिल्मी प्रयोगों के उत्कर्ष उदाहरण हैं। ये गीत तवायफ़ पात्रों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं जो केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि स्त्री की चेतना, प्रेम की पीड़ा, और सामाजिक आलोचना के स्वर भी हैं (Mishra, 2015, p. 146)। दोनों गीतों में राग पीलू और राग भैरवी की झलक मिलती है, परन्तु इन्हें लोक और फिल्मी धुनों से भी जोड़ा गया है।

4. **ठुमरी का आधुनिक प्रयोग: परंपरा का पुनर्निर्माण**
2000 के बाद भी कुछ फिल्में, जैसे Parineeta (2005) की "पियु बोले…" में ठुमरी तत्व देखे जा सकते हैं। हालांकि ये शुद्ध ठुमरी नहीं हैं, परन्तु उनमें बोल-बनाव शैली, रागाधारित संरचना, और मृदु भावों की प्रस्तुति से स्पष्ट होता है कि ठुमरी का प्रभाव आज भी फिल्म संगीत में विद्यमान है (Dwivedi, 2012, p. 118)।

विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि:

- ठुमरी को हिंदी सिनेमा में मुख्यतः नारी पात्रों के भावनात्मक विमर्श के लिए प्रयोग किया गया।
- पारंपरिक ठुमरी का प्रयोग धीरे-धीरे फिल्मी व्याकरण के अनुसार बदला, परन्तु उसके भावात्मक तंतु स्थिर रहे।
- ठुमरी ने फिल्मी संगीत को संवेदनशीलता, सौंदर्य और काव्यात्मकता प्रदान की।
- ठुमरी के माध्यम से तवायफ़ पात्रों को सामाजिक आलोचना का माध्यम बनाया गया।

इस विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि हिंदी फिल्मों ने ठुमरी को न केवल लोकप्रिय बनाया, बल्कि उसे एक नए संदर्भ में पुनः व्याख्यायित भी किया।

चर्चा

“चित्रपट संगीत में ठुमरी गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन” यह दर्शाता है कि हिंदी सिनेमा में ठुमरी का उपयोग केवल शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक, लिंग-संबंधी और सामाजिक विमर्श का माध्यम भी रहा है। यह चर्चा उन विषयों को सामने लाती है जो ठुमरी को चित्रपट संगीत में मात्र संगीत विधा न मानकर, एक सांस्कृतिक वक्तव्य के रूप में प्रस्तुत करती है।

1. **तवायफ़ और ठुमरी: स्त्री दृष्टि का माध्यम**

फिल्मी ठुमरी का सर्वाधिक प्रमुख प्रयोग तवायफ़ चरित्रों के माध्यम से हुआ है। जैसे पाकीज़ा, उमराव जान और देवदास जैसी फिल्मों में ठुमरी को स्त्री की अभिव्यक्ति, उसकी यौनिकता और सामाजिक वर्जनाओं के बीच के तनाव को अभिव्यक्त करने के लिए उपयोग किया गया। मिश्रा (2015) लिखती हैं कि "फिल्मी ठुमरी स्त्री की सामाजिक सीमाओं में उसकी आत्मा की प्रतिध्वनि बन जाती है" (p. 144)। तवायफ़ के माध्यम से गाई गई ठुमरी, एक तरफ दर्शक को आकर्षित करती है और दूसरी तरफ समाज पर प्रश्नचिह्न भी लगाती है।

2. **फिल्मी सौंदर्यशास्त्र में ठुमरी की भूमिका**

ठुमरी के प्रयोग ने हिंदी फिल्मों को संगीतात्मक सौंदर्य, नाटकीय गहराई, और भावनात्मक बारीकी प्रदान की है। शाह (2008) का मानना है कि "ठुमरी एक ऐसी विधा है जो फिल्म के दृश्य को भावनात्मक रूप से निखार देती है, विशेषकर जब वह नायिका की आंतरिक स्थिति को उभारती है" (p. 98)। उदाहरणतः मोहे पनघट पे… गीत में दृश्य, रचना और भाव का संगम ठुमरी को फिल्म के श्रृंगारिक चाक्षुष माध्यम में बदल देता है।

3. **लोकप्रियता और शास्त्रीयता के बीच संतुलन**

फिल्मों ने ठुमरी को एक लोकप्रिय मंच प्रदान किया, परन्तु इसके साथ एक प्रश्न यह भी खड़ा होता है कि क्या इस प्रयोग में उसकी शास्त्रीयता को क्षति पहुँची? द्विवेदी (2012) कहती हैं कि "फिल्मों में ठुमरी की लय और रागात्मक संरचना को कभी-कभी संगीतकारों ने जनप्रिय बनाने हेतु सरलीकृत किया" (p. 119)। परन्तु यही सरलीकरण ठुमरी को एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में सहायक भी सिद्ध हुआ।

4. **नवाचार और उत्तर-आधुनिक प्रयोग**

आधुनिक फिल्मों में ठुमरी की मूल संरचना में कई प्रकार के नवाचार देखने को मिलते हैं — जैसे पश्चिमी वाद्ययंत्रों का उपयोग, समवेत शैली (fusion), और नाट्य संरचना के अनुसार गीत की लंबाई में कटौती। फिर भी, Parineeta जैसी फिल्मों में ठुमरी का भाव और शैली अब भी संरक्षित है। इससे यह संकेत मिलता है कि ठुमरी समय के साथ अनुकूलनशील रही है (Dwivedi, 2012, p. 121)।

5. **स्त्रीवाद, सामाजिक आलोचना और ठुमरी**

ठुमरी केवल प्रेम, विरह और श्रृंगार की अभिव्यक्ति नहीं रही, बल्कि एक स्त्रीवादी हस्तक्षेप के रूप में भी सामने आई है। छिब्बर (2011) के अनुसार, "ठुमरी में स्त्री का स्वर उसकी देह के पार जाता है और आत्मा की अनुभूति बन जाता है" (p. 50)। हिंदी फिल्मों ने इस स्वर को कभी तवायफ़ के कंठ से, कभी नायिका के मौन से, तो कभी अंतर्निहित सांगीतिक संरचना से बाहर आने दिया।

निष्कर्ष

"चित्रपट संगीत में ठुमरी गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन" से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी सिनेमा में ठुमरी केवल एक शास्त्रीय संगीत शैली के रूप में नहीं, बल्कि एक बहुआयामी सांस्कृतिक उपकरण के रूप में विकसित हुई है। इसने नारी भावनाओं, तवायफ़ परंपरा, प्रेम-विरह, सामाजिक विडंबनाओं तथा सौंदर्यशास्त्र को एक साथ जोड़ने का कार्य किया है।

ठुमरी का चित्रपट संगीत में प्रवेश शास्त्रीयता के अनुशासन को लोकप्रियता की भाषा में अनुवादित करता है। फिल्मों ने ठुमरी को तवायफ़ जैसे हाशिए पर खड़े पात्रों की आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और उनके माध्यम से समाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे पर संवेदनशील प्रश्न भी उठाए। यह शोध दर्शाता है कि ठुमरी न केवल एक रागात्मक गायन है, बल्कि एक संवेदना-प्रधान सामाजिक वक्तव्य भी है।

हालाँकि, फिल्मी प्रस्तुतियों में कभी-कभी इसकी शास्त्रीयता से समझौता किया गया, फिर भी इसके भाव-सूत्र, सांस्कृतिक प्रतीक और लयात्मकता बनी रही। आज के युग में, जबकि फिल्म संगीत में तेजी से तकनीकी और पाश्चात्य प्रभाव बढ़ रहे हैं, ठुमरी जैसी विधाओं की पुनर्प्रस्तुति और संरक्षण की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है।

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी सिनेमा ने ठुमरी को एक नया जीवन, नया श्रोता वर्ग और एक विस्तारित कलात्मक संदर्भ प्रदान किया है — जहाँ यह परंपरा से जुड़कर आधुनिकता में सांस लेती है।

संदर्भ

1. Chhibber, V. (2011). The courtesan's voice: Thumri in Indian popular culture. *Journal of South Asian Popular Culture*, 9(1), 45–51. https://doi.org/10.1080/14746689.2011.553371

(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

2. Dwivedi, A. (2012). *Hindi Cinema aur Bharatiya Shastriya Sangeet*. New Delhi: National Book Trust.
3. Mishra, D. (2015). Tawayaf Parampara aur Hindi Cinema mein Thumri ka Prayog. *Sangeet Natak Akademi Patrika*, 49(2), 140–150. Retrieved from https://ignca.gov.in/journals/sangeet-natak/
4. Shah, P. (2008). Indian Classical Music and the Cinema: *Intersections of Tradition and Modernity*. Mumbai: Marg Publications.
5. Yadav, R. (1996). *Thumri: Swar aur Samvedna*. Delhi: Vani Prakashan.
6. Kaur, M. (2010). *Gender and the Indian Courtesan: A Cultural Analysis*. New Delhi: Rawat Publications.
7. Khokar, A. (2000). *Traditions of Thumri*. New Delhi: Roli Books.
8. Upreti, R. (2007). *Bhartiya Sangeet mein Stri aur Tawayaf Pratha*. Lucknow: Sangeet Karyalay.
9. Jain, A. (2016). *The Voice of the Courtesan: Gender, Class and the Cinema. Studies in South Asian Film & Media*, 8(1), 61–75. https://doi.org/10.1386/safm.8.1.61_1
10. Varma, M. (2011). *Lok Sangeet aur Hindi Film Sangeet ka Antar Sambandh*. Jaipur: Publication Scheme.